कागदी जॉन

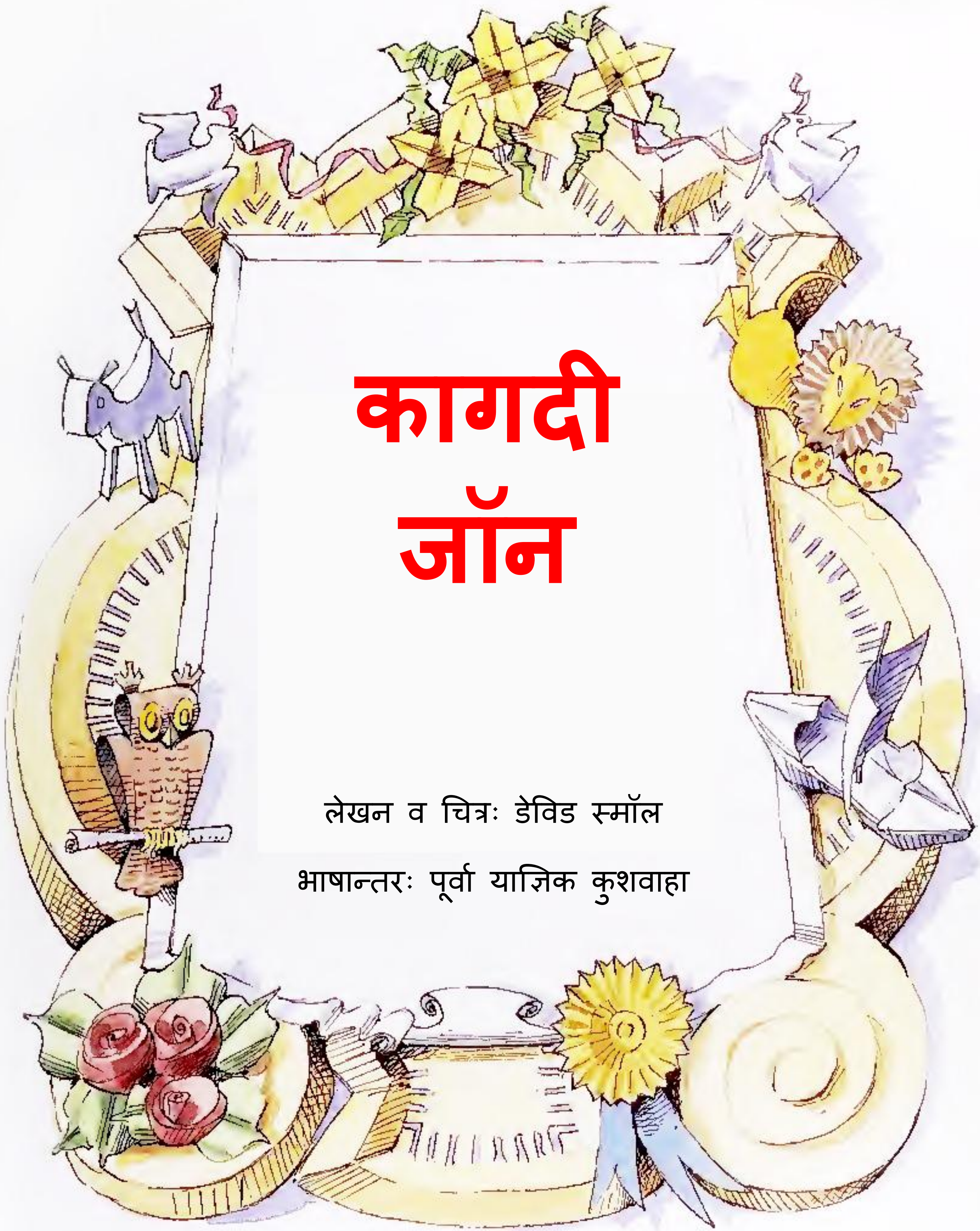
लेखन व चित्रः डेविड स्मॉल

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



एक दिन एक नेक अजनबी समुद्र के पास बसे एक कस्बे में आता है। वह कागज़ को मोड़-तोड़ कर पंछी, मुखौटे और फूलों के गुलदस्ते बना उन्हें बाज़ार में बेच, अपनी गुजर-बसर चलाता है। वह बच्चों के लिए कागज़ की नावें बनाता है। यहाँ तक कि वह खुद रहने के लिए कागज़ का ही मकान भी बनाता है। कस्बे के लोग उसे कागदी जॉन कहने लगते हैं। वे यह भी कहने लगते हैं कि वह इतना भला है कि शैतान से भी निभा ले।

जब उसकी मछलियाँ पकड़ने के बंसियों में एक छोटा सुरमई रंग का शैतान फंस जाता है, जॉन उसे बचाता है। उसके लिए खाना बनाता है, सोने के लिए कागज़ मोड़-जोड़ कर पलंग और बिछौना बनाता है। पर उसका नाशुक्रिया मेहमान अपनी आदतों से बाज़ नहीं आता। कागदी जॉन और उसके कौशल की असली परीक्षा तब होती है, जब उसे शैतान की विनाशकारी चाल को बेअसर करना पड़ता है।



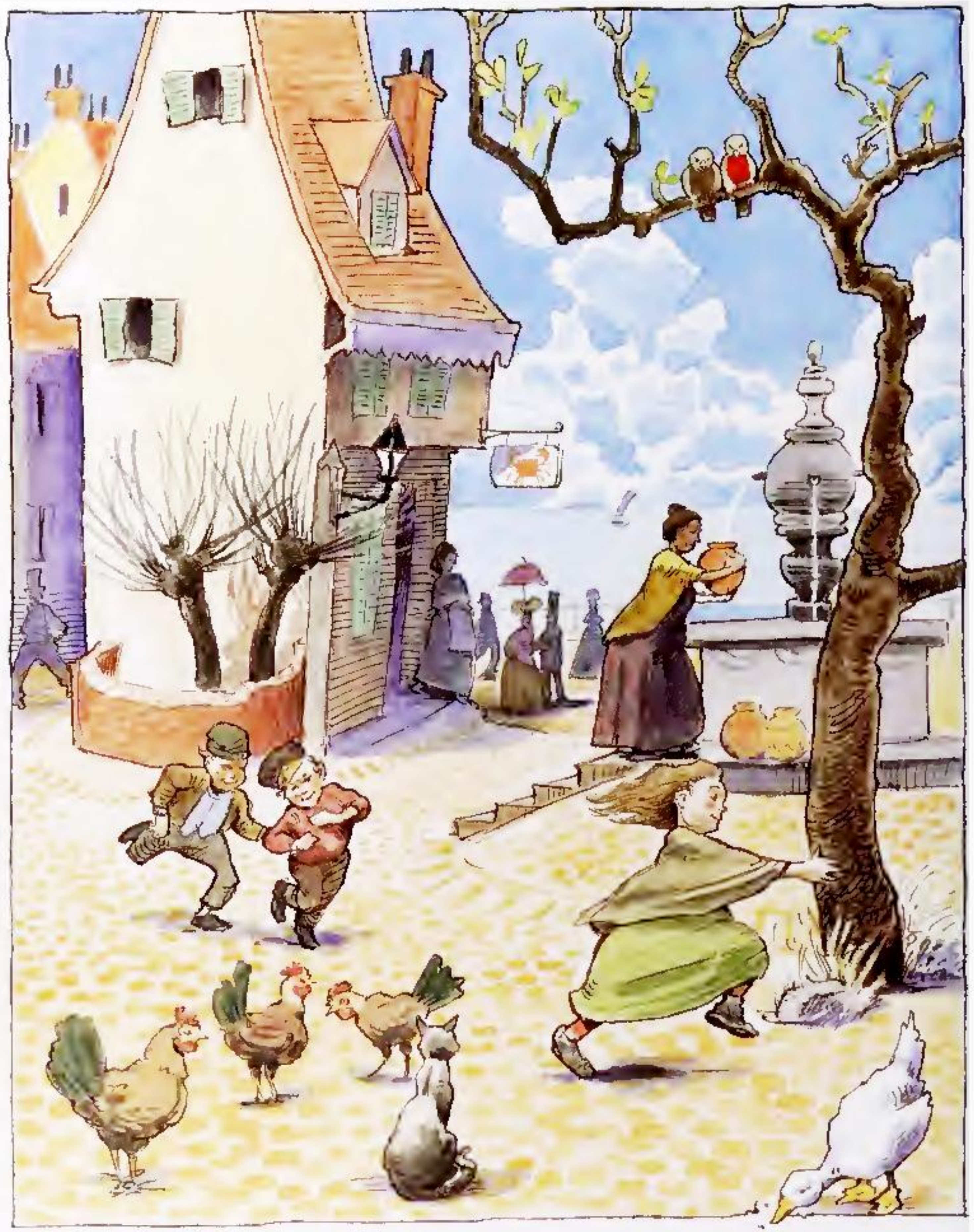
कागदी जॉन

लेखन व चित्रः डेविड स्मॉल

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

शैरी के लिए





कागज़ से बनी एक टोपी पहने एक अजनबी समुद्र किनारे बसे एक कस्बे में आया। एक व्यस्त चौराहे पर रुका और अपनी जेब से कागज़ निकाला और उसे मोड़ कर, चुटकी से दबा कर उसने एक ख़ूबसूरत गुलाब बनाया।

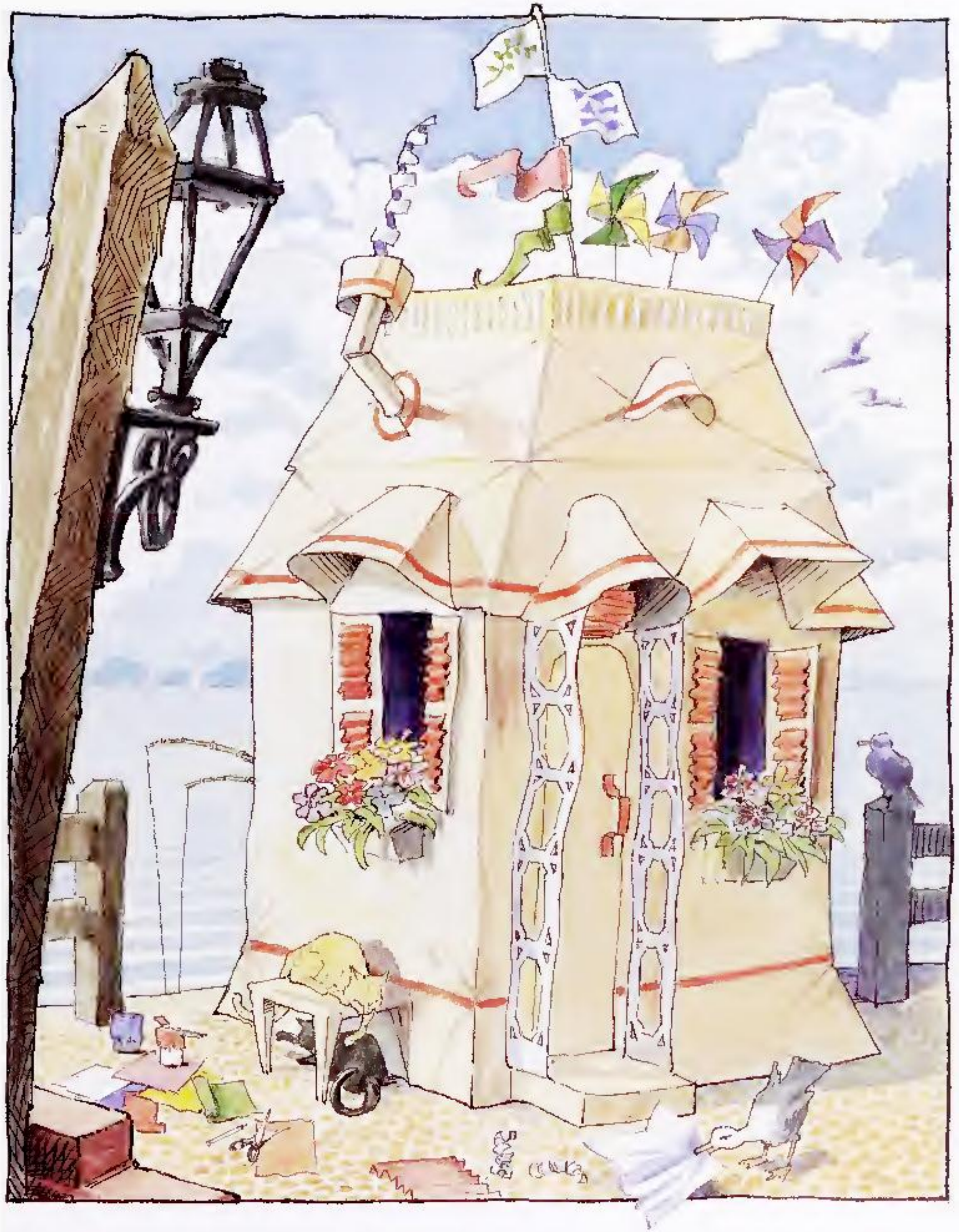
जल्द ही उस अजनबी ने जिसका नाम जॉन था, कागज़ से कई फूल बना लिए। एक महिला ने उससे वह गुलदस्ता ख़रीद लिया।



जॉन ने खुद के रहने के लिए समुद्र के पास ही कागज़ का एक घर बनाया। और जैसा चीन के लोग अपनी छतरियों से पानी न टपके के लिए करते हैं, उसने घर की दीवारों को लाख के रंगों से पोता। उसका घर अन्दर से आरामदेह और गर्म था।

उसने घर की खिड़की से मछली पकड़ने के लिए बंसियाँ लगाईं, ताकि वह अपना खाना ताज़ा-ताज़ा सीधे समुद्र से पकड़ सके।









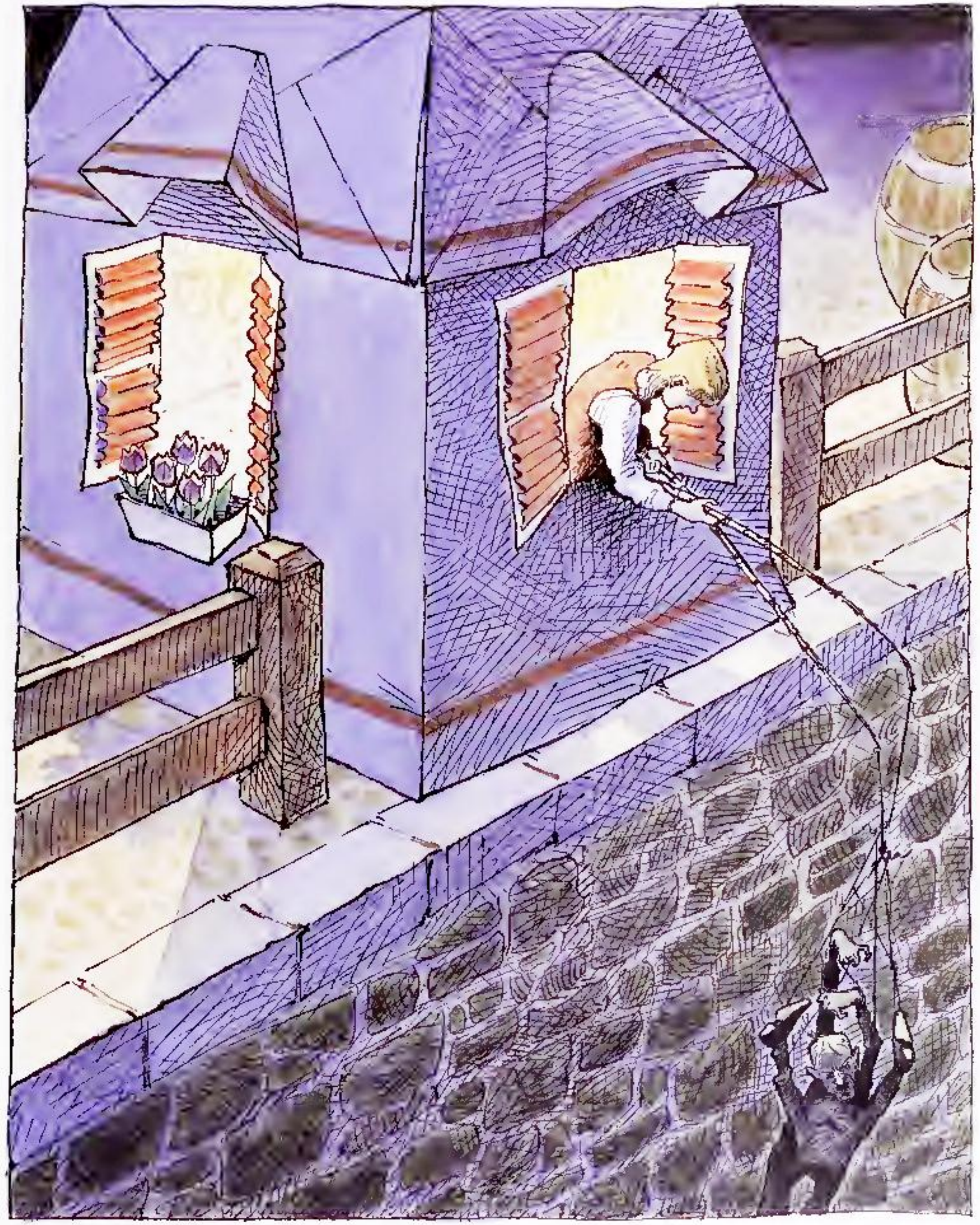
कस्बे भर के बच्चे कागज़ के घर में रहने वाले आदमी से मिलने आते। वह हरेक को कागज़ की नाव बना कर देता। बच्चे उनसे शानदार नौका दौड़ का आयोजन करते।

कस्बे के लोगों को वह एक विनम्र और भले स्वभाव का इन्सान लगा। जल्दी लोग उसे कागदी जॉन नाम से पुकारने लगे। वे कहने लगे कि वह इतना भला है कि शैतान तक से निभा सकता है। और हुआ यह कि ठीक यही करने का मौका भी आ गया।



एक रात कागदी जॉन एक पतंग बना रहा था, जो सूरज-सी गोल और सुनहली थी। उसका काम खत्म होने ही वाला था कि मछलियाँ पकड़ने की उसकी बंसियाँ यों हिलने लगीं मानो उसमें एक बड़ी मछली फंसी हो। साथ ही उसे बाहर से बुदबुदाने, बड़बड़ाने और गालियाँ बकने की आवाज़ भी सुनाई दी।

कागदी जॉन खिड़की के पास गया। नीचे झाँकने पर उसने पाया कि एक छोटा-सा आदमी उसकी बंसियों में फंसा है। वह जितना छटपटाता, उतना ही और उलझता जा रहा था। कागदी जॉन ने उसे जल्दी से ऊपर घर में खींचा और बंसियों से छुड़ाया।





वह छोटा आदमी पूरी तरह सुरमई रंग का था। उसकी आँखें और उसके कपड़े, उसकी चमड़ी तक, सब सुरमई थे, उसके टेढ़े-मेढ़े दाँत भी। दरअसल वह शैतान था जो दुनिया में बदमाशी करते फिर रहा था। वह जो कुछ बिना पैसे चुरा पा सकता था उसे ही चुरा कर, जी रहा था। पर वह इतना अभागा शैतान था कि उसके पास शैतानी की एक ही चाल थीः चारों दिशाओं की हवाएं उसके बस में थीं। पर क्योंकि यह चाल वह केवल एक ही बार चल सकता था, उसने इसे चाल को उस दिन के लिए बचा रखा था, जब उसे इसे चलने की सचमें ज़रूरत हो।

जैसे ही वह बंसियों से आज़ाद हुआ, वह शिकायती आवाज़ में चीखा, “मैं भूखा हूँ!”

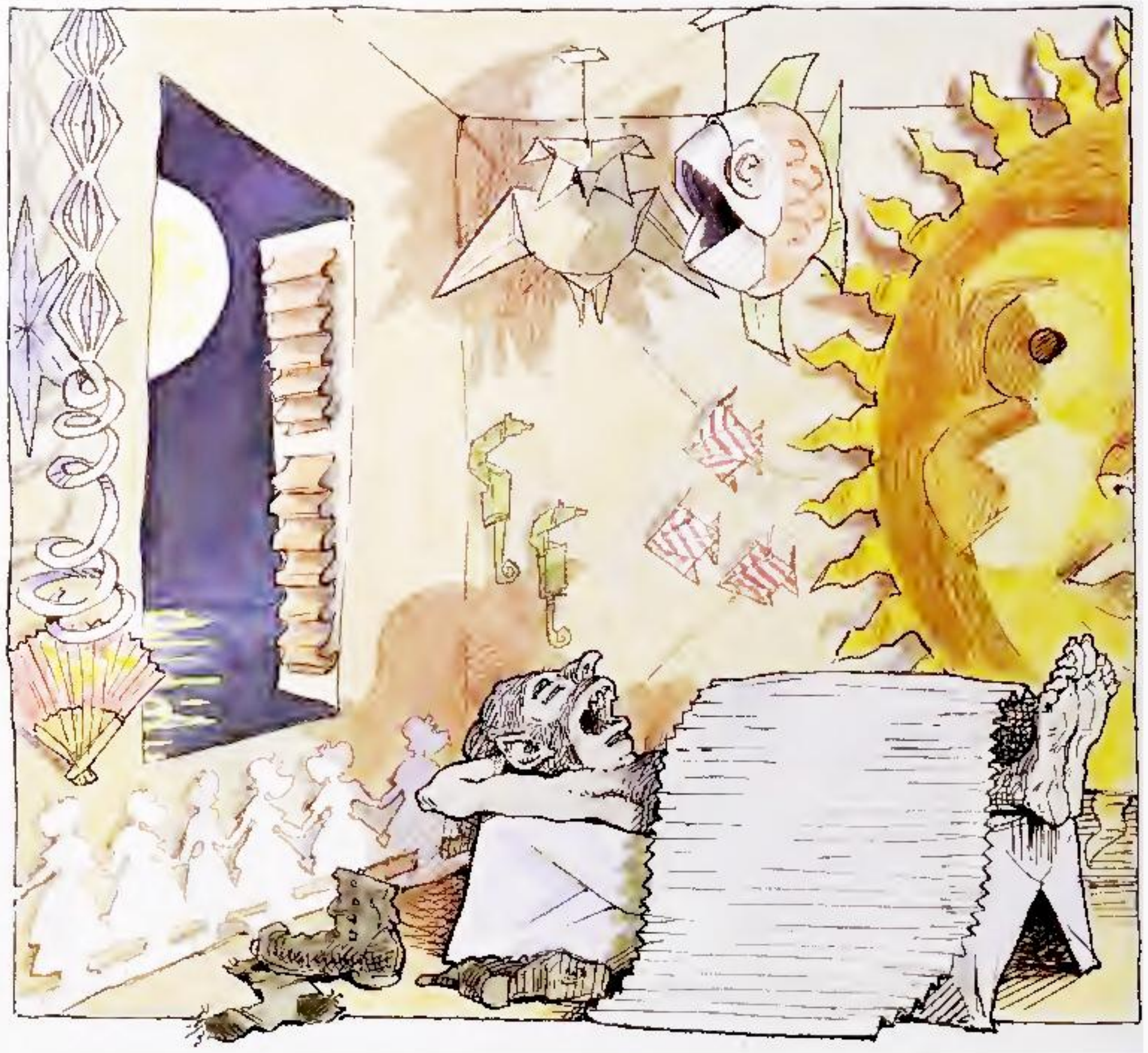
“भूखे हो, तो फिर तुम बेशक खाओगे!” कागदी जॉन ने कहा।

“पर मैं बैठूं कहाँ?” शैतान ने मांग की।

“लो यहाँ बैठो,” कह कागदी जॉन ने उसके लिए एक कागज़ से कुर्सी और मेज़ बनाई, और मेज़ पर उसके खाने के लिए डबल रोटी, पनीर और मछली परोस दी।

शैतान ने लालच से सब भकोसा और जम्हाई ली। “मैं थक गया हूँ,” उसने ऐलान किया। “अब मैं सोऊँ कहाँ?”

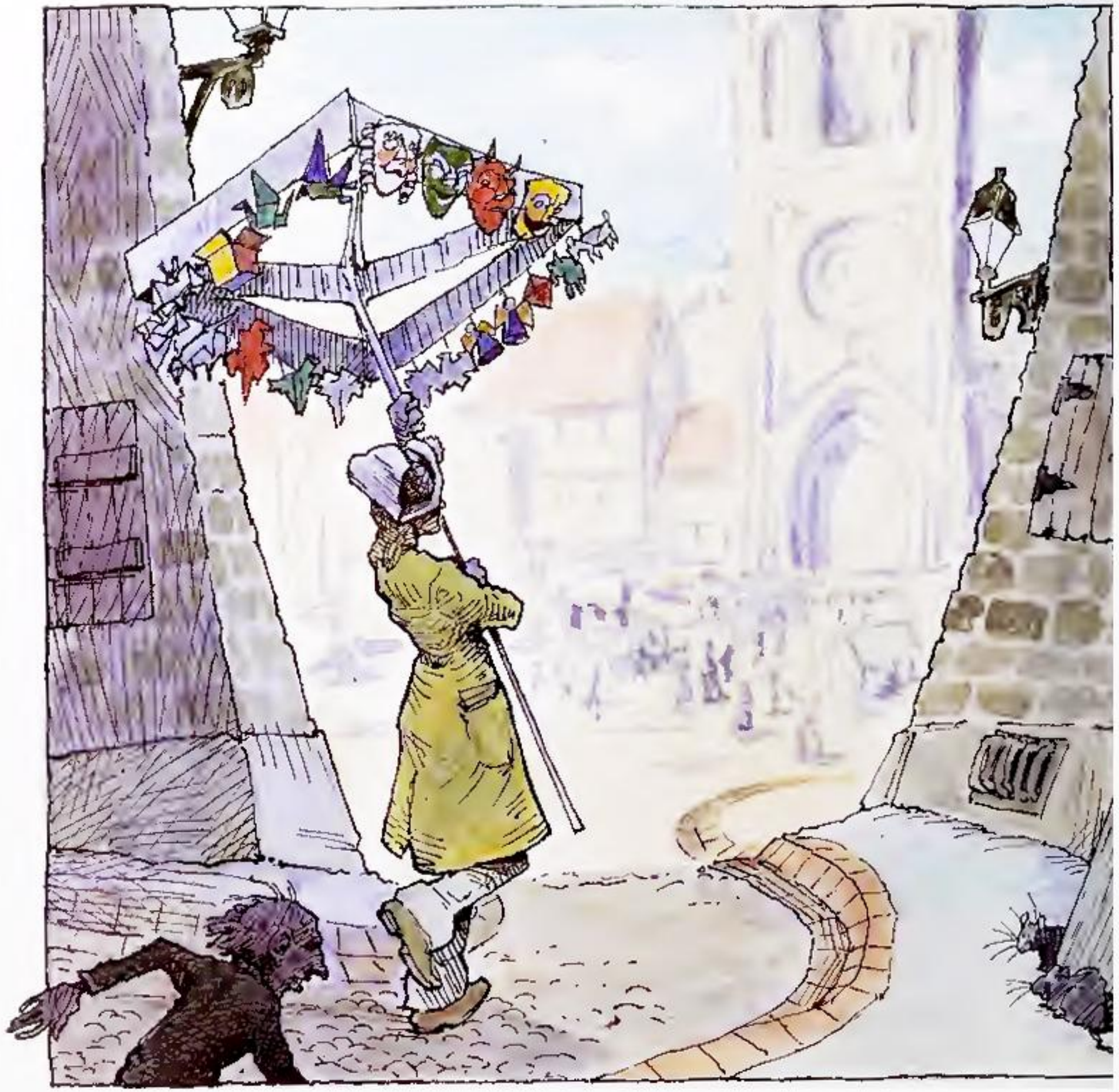




कागदी जॉन ने कागज़ को मोड़-तोड़ कर एक पलंग बनाया। शैतान उस पर लेटा और फ़ौरन खर्राटे मारने लगा।

कागदी जॉन ने अपनी सुनहरी पतंग पूरी की। तब पलंग पर लेट सोने की कोशिश करने लगा। पर शैतान के खर्राटों ने उसे जगाए रखा। सो उसने पूरी रात कागज़ मोड़-तोड़ भेड़ें बनाने में बिताई।

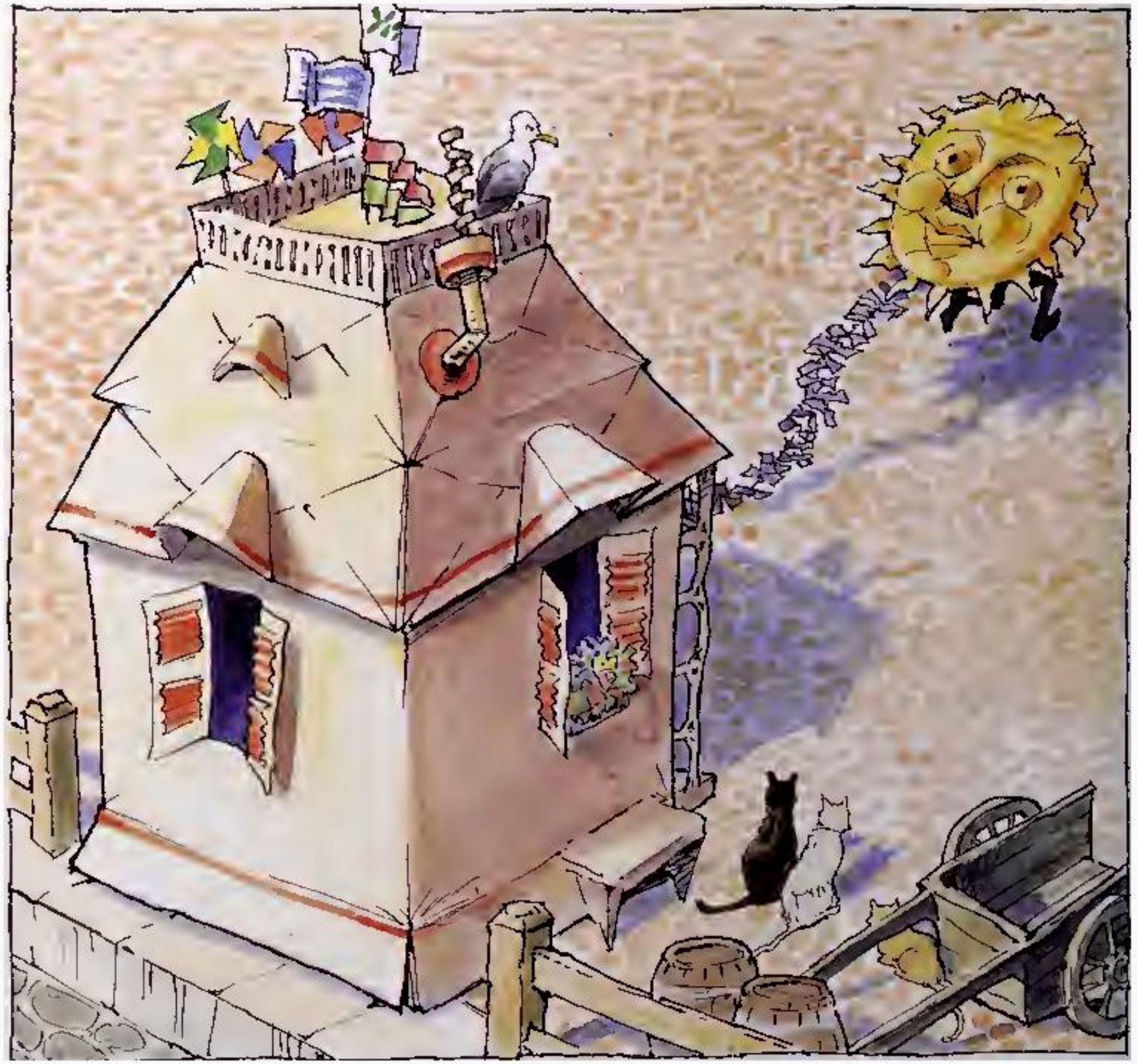




अगला दिन हाट का दिन था। हमेशा की तरह कागदी जॉन अपना सामान ले उसे बेचने चौक की ओर निकल पड़ा। शैतान ने उसका पीछा किया और जैसे ही वे चौक पर पहुँचे, वह लोगों की भीड़ में ग़ायब हो गया।

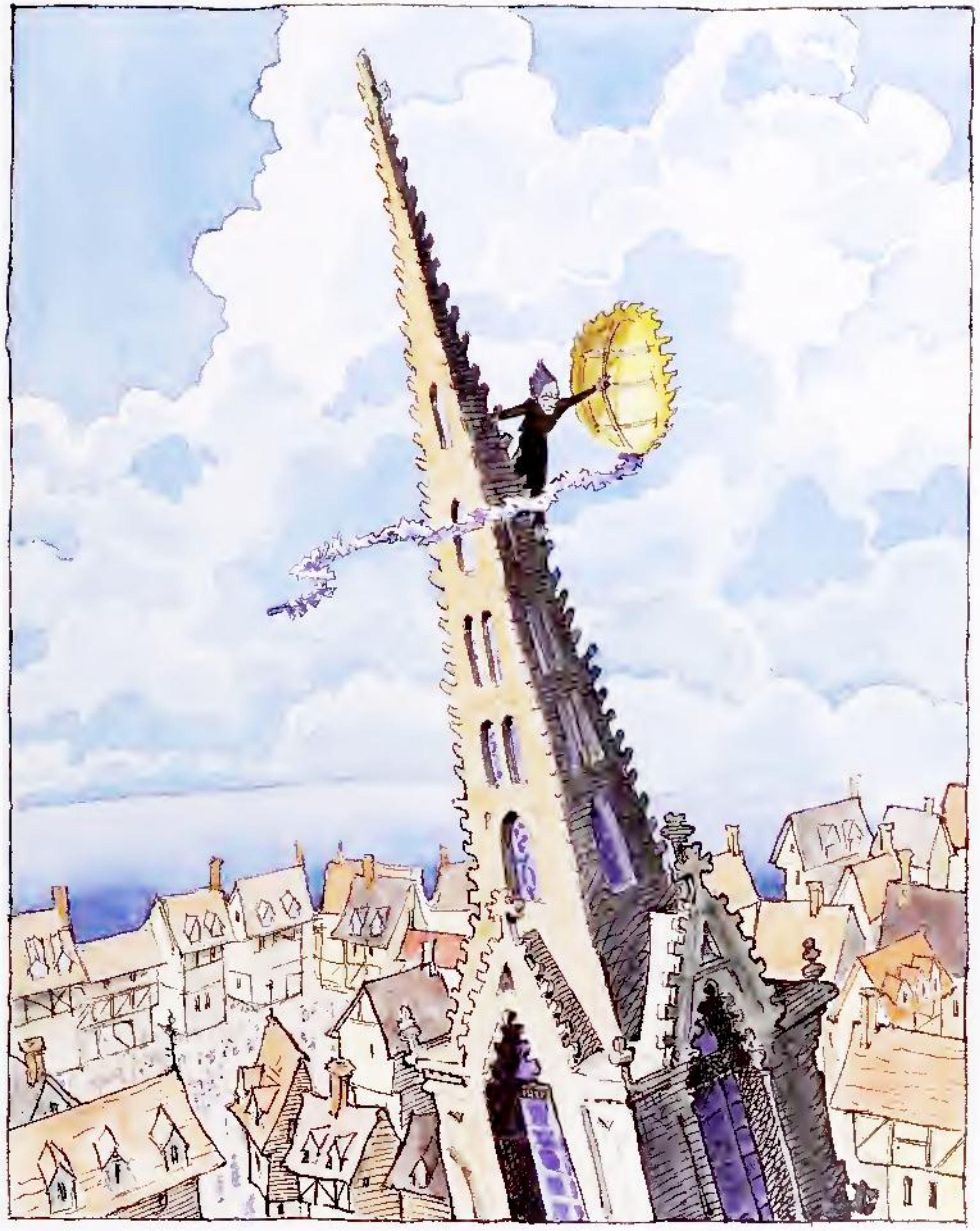
अचानक, "चोर! चोर!" की आवाज़ें तब गूंजने लगीं, जब लोगों को पता चला की उनकी जेबें काटी जा चुकी हैं। शैतान हाट से किसी सुरमई चूहे की तरह भागा। उसे यों भागते देख कागदी जॉन सोच में पड़ गयाः "इस छुटके को हड़बड़ी किस बात की है?"





कस्बे से बाहर निकलते वक़्त शैतान कागदी जॉन के घर के पास से गुज़रा। उसे सुनहली पतंग याद आई। उसने खुद से कहा, "मैं एक पाखी की तरह उड़ कर भी तो बच निकल सकता हूँ।"

उसने पतंग चुराई, गिरजे की ओर दौड़ा और घंटाघर पर चढ़ने लगा। वह मीनार के ठेठ ऊपर तक चढ़ गया।



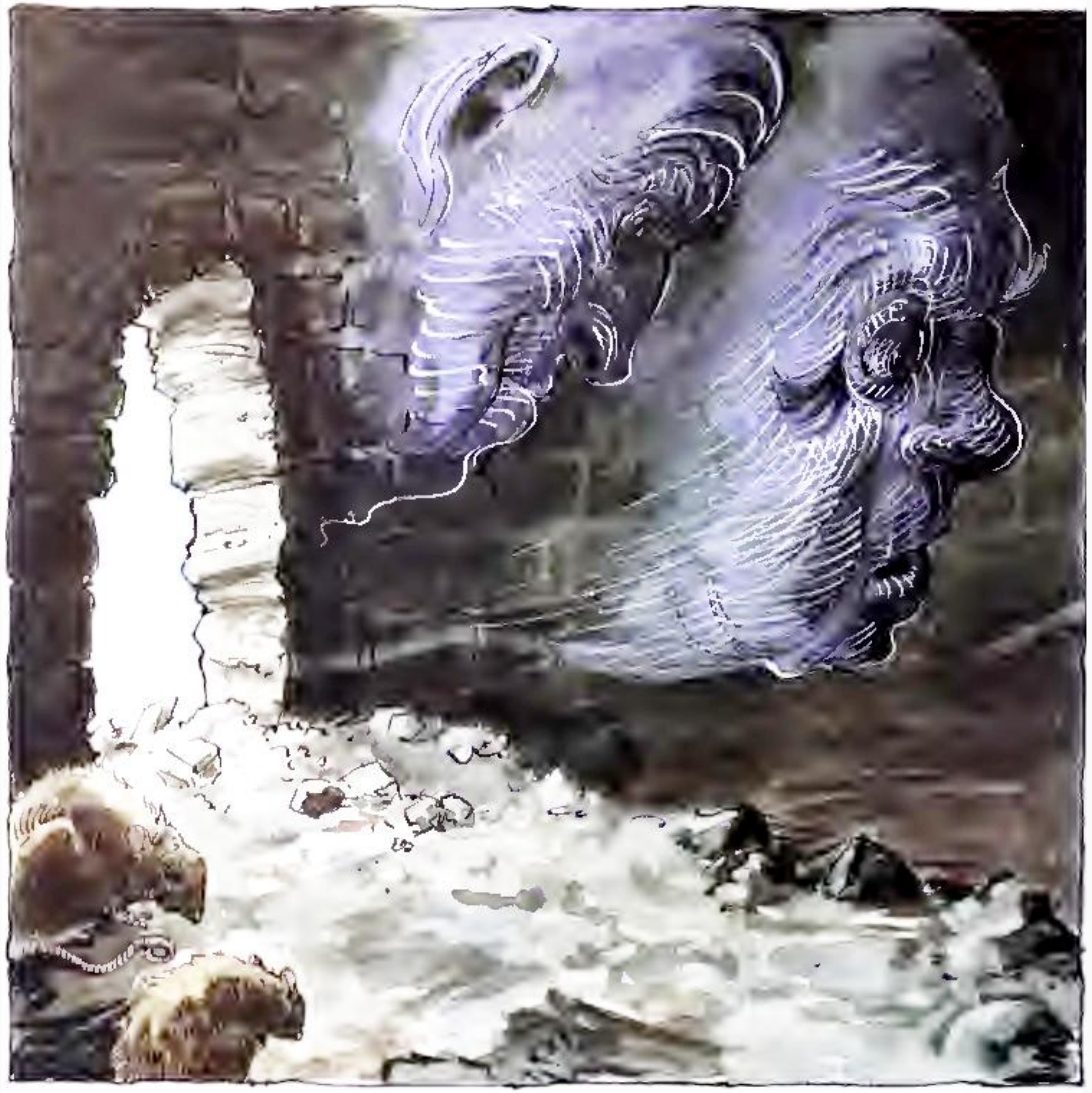
हवा के पहले झोंके ने पतंग ऊपर उठा दी। कागदी जॉन अपनी सुनहली पतंग को छतों के ऊपर से उड़ते देख हैरान रह गया। तब उसने ग़ौर किया कि पतंग के पीछे एक सुरमई आकृति है।

जब पतंग हवा के झोंकों से ऊपर-नीचे उठी और गिरी, शैतान की ठसाठस भरी जेबों में से एक सोने की घड़ी और एक बटुआ निकल गया। जब ये चीज़ें नीचे सड़क पर गिरीं, कागदी जॉन समझ गया कि शैतान ही चोर है।

उसने जल्दी से कागज़ से एक पैनी चोंच वाला बाज़ बनाया और निशाना साध हवा में उछाल दिया। बाज़ पतंग से टकराया और शैतान छिटक कर धरती की ओर गिरने लगा। ठीक उसी जगह जहाँ पुलिस उसे गिरफ्तार कर कैदखाने ले जाने के इन्तज़ार में खड़ी थी।







कैद खाने की अंधेरी कोठरी में बैठे शैतान ने सोचा कि उसकी इकलौती चाल का इस्तेमाल करने का समय आ चुका है। उसने जादुई मंत्र पढ़ा और चारों हवाओं को बुलाया। हवाएं आईं, उन्होंने कैदखाने की दीचार में एक छेद कर दिया।



वे उस छोटे सुरमई शैतान के सामने रुकीं और उसके हुक्म का इन्तज़ार करने लगीं।

"इस पूरे कस्बे को तबाह कर दो!" शैतान ने चीख कर हुक्म दिया। "उसे समुद्र में बहा दो! खास कर कागदी जॉन के घर को!"



आसमान काला हो गया। चारों हवाएं दानवों की तरह चीत्कार करतीं कस्बे के एक से छूसरे छोर तक, तोड़-फोड़ करती बहीं।

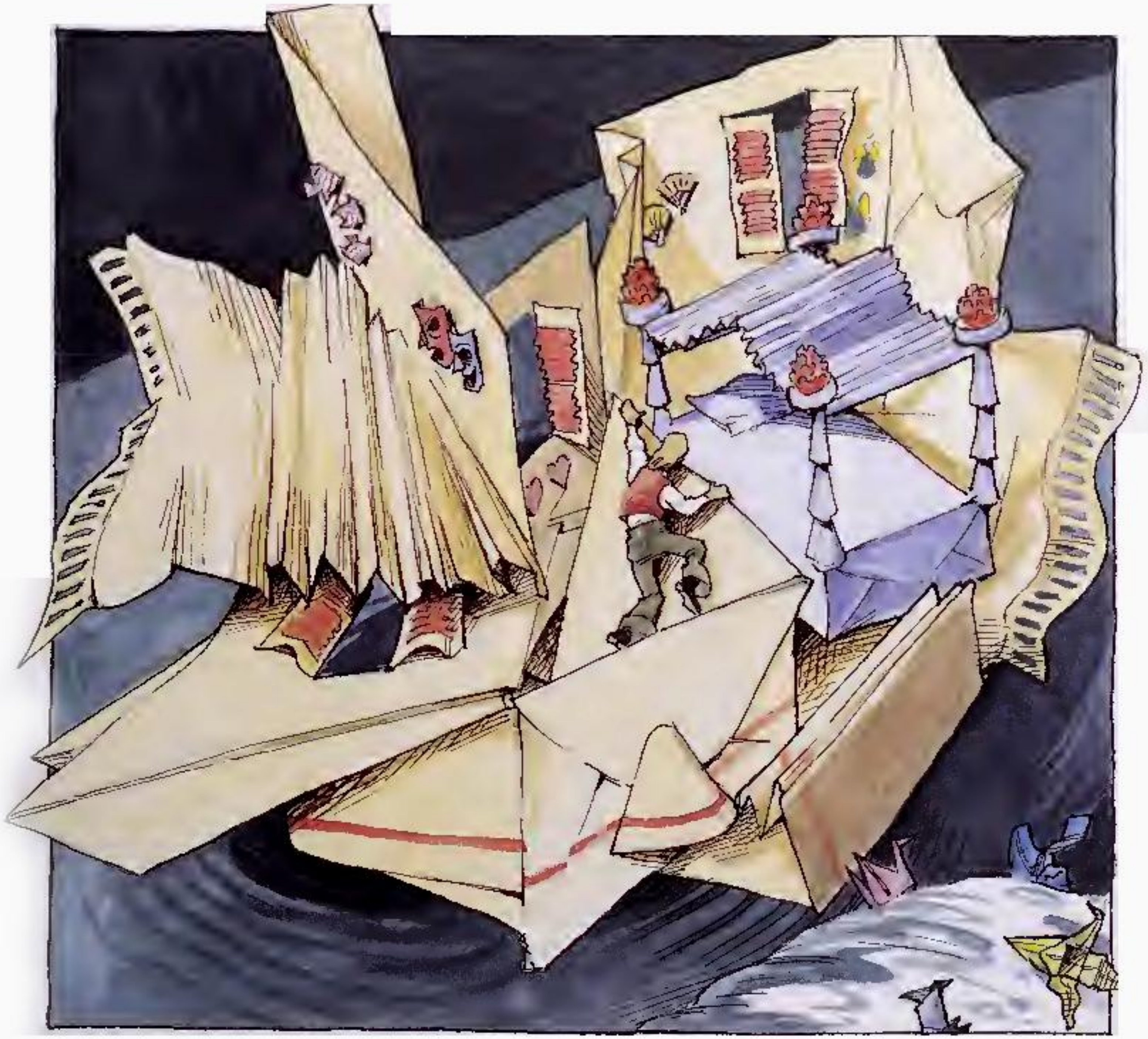
समुद्र के उफनते पानी में कस्बे के लोग जान बचाने के लिए अपने घरों की छतों और दूसरे मलबे से चिपके थे। वे यही दुआ कर रहे थे कि वे डूब न जाएं। तभी ऊपर हवा में कागदी जॉन का घर उड़ता आया।



जिस समय उसका घर ज़मीन से उखड़ कर हवा में उठा था, कागदी जॉन घर में ऊंघ रहा था।

जब घर हवा में उलटा-पलटा कागदी जॉन और कागज़ से बना घर का सारा सामान बिखरा और उछला। तब घर छपाक से पानी में जा गिरा।





कागदी जॉन एक ही काम कर सकता था, सो वह उसी में लग गया। जितनी फुर्ती से हो सकता था वह कागज़ फाड़ने, मोड़ने, उसे चुटकी से दबा कर आकार देने में जुट गया।

घर की दीवारों के आकार बदलने लगे। पहले तो लगा मानो वह एक विशाल फूल है, जो बस खिलने ही वाला है।

तब वह एक विशाल परिन्दे-सा लगने लगा।





फिर एक नाव सा।

नाव ही बनाई थी कागदी जॉन ने, जिसका लाख से पुता मज़बूत ढाँचा था। नाव अच्छे से तैर रही थी।

कागदी जॉन ने कस्बे को लोगों को नाव में बैठा कर, कई बार आ-जा कर, उन्हें सुरक्षित किनारे उतारा।





जहाँ तक शैतान का सवाल है, उसकी चाल उसके लिए ही उल्टी पड़ गई। जिस दौरान चारों हवाएं कस्बे को तबाह कर रही थीं, शैतान किनारे खड़ा हंस और नाच रहा था। पर तब हवाएं पलटीं और उसे भी उड़ा ले गईं। वहाँ, जहाँ से वह आया था।

जब कस्बे को फिर से बनाया-बसाया गया, लोगों ने चाहा कि कागदी जॉन उनका मेयर बने। पर उसने कहा, "जी नहीं, शुक्रिया! पर मुझे सादा जीवन पसन्द है।"

सो वह कागज़ से बने अपने घर में रहता रहा। बच्चों के लिए नावें बनाता रहा। उसी तरह जैसे वह पहले किया करता था।



डेविड स्मॉल ने बच्चों के लिए कई क़िताबें लिखीं और चित्रित की हैं। इनमें *यूलेली एण्ड द हॉपिंग हैंड* भी शामिल है, जिसे स्कूल लाइब्रेरी जर्नल ने बेस्ट बुक घोषित किया। उन्होंने बर्र टिलस्टॉर्म की रचना *द ड्रैगन हू लिव्ड डाउनस्टेयर्स* को भी चित्रों से संवारा है। वे कालामाज़, मिशिगन में रहते हैं। *पेपर जॉन*, फर्रार, स्ट्राउस एण्ड जीवो द्वारा प्रकाशित उनकी पहली पुस्तक है।

